वैदिक गणित के लेखक स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ जी

जगतगुरु स्वामी भारती कृष्ण तीर्थजी महाराज की वैदिक गणित की स्रोत पुस्तक गणित के शिक्षण में गुणवत्ता बढ़ाने के लिए वरदान सिद्ध हुई है। स्वामी जी ने 16 पांडुलिपियाँ लिखी थी और प्रत्येक पांडुलिपि में एक गणित सूत्र की विस्तृत व्याख्या की गई थी। परन्तु ये पांडुलिपियाँ उनके शिष्य द्वारा लुप्त कर दी गई । जब स्वामी जी को इन पांडुलिपियों के लुप्त होने का पता चला तो उन्होंने इन सोलह सूत्रों पर आधारित एक परिचयात्मक ग्रन्थ लिखा। लेकिन स्वास्थ्य ख़राब होने के कारण वे इस विषय में ज्यादा काम न कर सके। स्वामी जी1960 में महासमाधी में विलीन हो गए और स्वामी जी के द्वारा लिखे इस ग्रन्थ को 1965 में प्रकाशित किया गया और वैदिक गणित इस पुरस्तक ने विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित की।

स्वामी जी का जन्म मार्च 14, 1884 को उच्च शिक्षित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री पीo नरसिम्हा शास्त्री था जो डिप्टी कलैक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। जगद्गुरु के बचपन का नाम वेंकटरमण था। वे बचपन से ही बहुत ही बुद्धिमान छात्र रहे और सभी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करते रहे । उन्होंने जनवरी, 1899 में मद्रास विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ जी संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे। उन्हें जुलाई, 1899 में मद्रास संस्कृत के संगठन द्वारा सरस्वती की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। स्वामी जी ने 1903 में अमेरिकन कॉलेज ऑफ साइंसेज, रोचेस्टर,न्यूयॉर्क से संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी, गणित, इतिहास और विज्ञान में एमo एo की परीक्षा उत्तीर्ण की और उन्होंने आठ वर्ष वेदांत दर्शन और ब्रह्म साधना का भी गहन अध्ययन किया ।

गोवर्धन मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री मधु सूदन तीर्थ जी उनसे बहुत प्रभावित थे I जब वे बीमार थे, तो उन्होंने स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ जी से निवेदन किया कि वे गोवर्धन मठ गद्दी को सुशोभित करें। स्वामी जी ने इस जिम्मेदारी को बहुत ही सहजता व सरलता से स्वीकार कर लिया।

चारों वेद ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद विश्वविख्यात हैं। इन वेदों में से अथर्ववेद में वास्तुकला, इंजीनियरिंग और गणित का ज्ञान सम्मिलित है। आठ वर्षों की साधना के बाद उनको वेदों से गणित के 16 सूत्रों और13 उप-सूत्रों के दर्शन हुए जो वैदिक गणित सूत्रों के नाम से प्रचलित हुए।

वैदिक गणित शिक्षण के लक्ष्य

1.विद्यार्थियों की गणित में रुचि बढ़ाना।
2. गणित के प्रश्न हल करने में छात्रों के समय की बचत करना।
3. गणित में शोध के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना।
4. विद्यार्थियों की तार्किक शक्ति का विकास करना।
5. गणित के प्रश्नों को हल करने के लिए विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढाना।
6. विद्यार्थियों की गणना करने की गति और क्षमता को बढ़ाना ।
7. विद्यार्थियों की स्मृति का विकास करना।
8 . मानसिक क्षमता का विकास करना।
9. प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए गति बढ़ाना ।

वैदिक गणित का महत्त्व

वैदिक विधि द्वारा अधिकांश गणितीय समस्याओं पर मौखिक विचार करने और उनका हल ज्ञात करने के कारण उसे मानस गणित कहा जाता है। मानस गणित के अभ्यास से मानव के मन में एकाग्रता तथा स्मृति का विकास होता है। उसके चिंतन और मनन की प्रखरता से विचारों की परिपकवता प्राप्त होती है। इस प्रकार के विचार प्रवाह से प्रखर व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

वेदवाणी में यह भी संदेश है कि मनुष्य जो मन में सोचता है तदनुसार ही उसकी वाणी प्रकट होती है। वह जो वचन कहता है उसके अनुसार ही वह आचरण करता है। जैसा आचरण करता है वैसा ही वह मनुष्य बन जाता है। वैदिक गणित अपनी सरलता और रोचकता के कारण मानव मन में जिज्ञासा का भाव उत्पन्न करता है। जिज्ञासा का यह भाव उसे जागरूक बनाता है। अभ्यास से यह जागरूकता ओर अधिक प्रकट हो जाती है और मानव मन को बौद्ध से भर देती है। इस अभ्यास से उसकी अंतः चेतना जागृत होने लगती है और इस प्रकार होता है मानव के व्यक्तित्व तथा दिव्यता का विकास।

आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार अत्यंत मेधावी व्यक्ति भी अपनी संपूर्ण मानसिक क्षमता का करीब 20% ही उपयोग करता है और इसके मन की शेष क्षमता व्यर्थ पड़ी रहती है। वैदिक गणित के 16 सूत्र अंतः चेतना के जागरण में महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो जीवन के सत्य का द्वार खोलते हैं । वैदिक गणित पुस्तक के लेखक स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ जी के अनुसार वैदिक गणित के अध्ययन से मानव मस्तिष्क के विकास की गति सामान्य गति से 5 या 6 गुना अधिक हो जाती है। वैदिक गणित मानव मस्तिष्क का पूर्ण विकास करता है।

बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि आज विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्विद्यालयों ने वैदिक गणित के महत्व को समझा है और वैदिक गणित के शिक्षण को अनिवार्य किया है।

वैदिक गणित पाठकों के अनुभव

1. वैदिक गणित प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए एक वरदान है।
2. वैदिक गणित अत्यंत रोचक है और हमारी कल्पना से बहुत आगे है।
3. विश्वविद्यालयों के प्रांगण में इसका शिक्षण अत्यंत सुखद है।
4. हमारे पूर्वज गणित में बहुत उन्नत थे।
5. यदि वैदिक गणित हमें आरम्भ से पढ़ाया जाता तो कंप्यूटर भारत में ही बनते।
6. वैदिक गणित पढ़ने से ऐसा लगता है कि हमें संस्कृत सीखनी चाहिए।
7. विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक गणित का ज्ञान होना चाहिए।
8. वैदिक गणित के प्रयोग से शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति संभव है।
9. वैदिक गणित अंको के रहस्य में प्रकृति की जानकारी देता है और थोड़े से अभ्यास के बाद वैदिक गणित से मानसिक गणना संभव हो जाती हैं। यह अत्यंत ही लाभदायक है और आने वाली पीढ़ी को प्रारंभ से ही इसका अभ्यास करवाना चाहिए।
10. वैदिक गणित का अध्ययन काल मेरे जीवन का सबसे अधिक रोचक व आनंददायक रहा।
11. गणित की अध्यापिका होने के नाते मेरी गणित में रूचि है परंतु वैदिक गणित ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया।
12. वैदिक गणित को सीखने से मुझे अद्वितीय आनंद की प्राप्ति हुई जिससे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

वैदिक गणित सूत्र

क्रमांक	सूत्रों के नाम	सूत्रों के अर्थ
1	एकाधिकेन पूर्वेण	पहले से एक अधिक के द्वारा।
2	निखिलं नवतश्चरमं दशत:	सभी नौ में से परन्तु अंतिम दस में से।
3	ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम्	सीधे खड़े और तिरछे दोनों प्रकार से
4	परावर्त्य योजयेत्	पक्षान्तरण कर उपयोग करें।
5	शून्यं साम्यसमुच्चये	समुच्चय समान होने पर शून्य होता है।
6	(आनुरुप्ये) शून्यमन्यत	अनुरूपता होने दूसरा शून्य होता है।
7	संकलनव्यवकलनाभ्याम्	जोड़कर और घटाकर।
8	पूरणापूरणाभ्याम्	अपूर्ण को पूर्ण करके।
9	चलनकलनाभ्याम्	चलन–कलन के द्वारा।
10	यावदूनम्	जितना कम है अर्थात विचलन।

11	व्यष्टिसमष्टि:	एक को पूर्ण और पूर्ण को एक मानते हुए।
12	शेषाण्यकेनचरमेण	अंतिम अंक से अवशेष को।
13	सोपान्त्यदव्यमन्त्यम्	अंतिम और उपान्तिम का दोगुना।
14	एकन्यूनेन पूर्वेण	पहले से एक कम के द्वारा।
15	गुणितसमुच्चय:	गुनितों का समुच्चय।
16	गुणकसमुच्चय:	गुणकों का समुच्चय।

वैदिक गणित उपसूत्र

क्रमांक	उपसूत्रों के नाम	उपसूत्रों के अर्थ
1	आनुरुप्येण	अनुरूपता के द्वारा
2	शिष्यतेशेषसंज्ञ:	बचे हुए को शेष कहते है ।
3	आधमाधेनान्तमांत्येन	पहले को पहले से, अंतिम को अंतिम से
4	केवलै:सप्तकं गुण्यात्	केवल 7 से गुणा करें
5	वेष्टनम्	विभाजानियता परीक्षण की एक विशिष्ट क्रिया का नाम
6	यावदूनम तावदूनम्	जितना कम उतना और कम
7	यावदून तावदूनीकृत्य वर्गं च योजयेत्	जितना कम उतना और वर्ग की योजना भी करें ।
8	अंन्त्ययोर्दशकेएपि	अंतिम अंको का योग दस
9	अंत्ययोरेव	केवल अंतिम द्वारा
10	समुच्चयगुणित:	सर्व गुणन
11	लोपनास्थापनाभ्याम्	विलोपन एव स्थापना द्वारा
12	विलोकनम्	अवलोकन द्वारा
13	गुणितसमुच्चय: समुच्चयगुणित:	गुणाकों के समूह का गुणनफल और गुणनफल के गुणाकों का योग समान होगा ।